Vol 5 Issue 4 May 2015

ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.org

International Recognized Double-Blind Peer Reviewed Multidisciplinary Research Journal
Indian Streams Research Journal
ISSN 2230-7850 Impact Factor : 3.1560(UIF)
Volume - 5 | Issue - 4 | May - 2015 Available online at www.isrj.org

हकीकत...सड़क हादसों की

प्रकाश तिवारी
एम.एस.सी न्यायिक विज्ञान, यूजीसी नेट, अपराधशास्त्र एवं न्यायिक विज्ञान विभाग, डॉ. हरिसिंह गौर वि.वि.सागर म.प्र.

Short Profile

Prakash Tiwari is a MSC Legal Sciences at Department of Criminology and Forensic Science in Dr. Hari Singh Gaur MP Vikviksagr. He has completed M.Sc., B.Sc.,PGDCA.

सारांश :
भारत में सड़क दुर्घटनाओं के आंकड़े दुनिया में सबसे अधिक है। यहां प्रतिवर्ष लगभग 3 लाख से अधिक सड़क दुर्घटनाएं होती हैं, जिसमें लगभग 6500 से अधिक लोगों को अपनी जान गंवानी पड़ती है। इनमें से अधिकतर दुर्घटनाओं का कारण वाहन चालकों की भूल और लापरवाही होती है। यातायात के नियमों की अवहेलना, तीव्र गति से व शराब पीकर वाहन चलाना, वाहनों की गड़बड़ी, सड़कों की खराब दशा तथा आवारा पशुओं के सड़क पर आ जाने जैसे कारणों के कारण ही दुर्घटनाओं का आंकड़ा दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। सड़क अब आवागमन का स्थान नहीं, बल्कि मौत से जिंदगी की आंख–मिचोली के खेल का मैदान बन चुकी है। स्पीडिंग, ड्रंकेन ड्रायविंग, रैष ड्रायविंग इन तीनों की बदौलत जो मौतें होती हैं, वो नसीब और नियती की करनी नहीं, बल्कि हम सब की गलतियों का परिणाम हैं। आज इन सब हालातों के जिम्मेदार जितना हमारा लीगल सिस्टम है उतने ही हम खुद भी है।

प्रस्तावना–

सड़क पर चलने वाला कोई भी व्यक्ति नहीं चाहता कि उसके साथ कभी भी कोई सड़क दुर्घटना हो, लेकिन अक्सर दुर्घटनाएं होती रहतीं है। हम सड़क पर अपनी गलतियों से सबक नहीं सीखते, हम सड़क के इस्तेमाल के सामान्य नियमों और सुरक्षा उपायों के बारे में अच्छी तरह परिचित होते हैं, लेकिन फिर भी हमारी असावधानियां ही दुर्घटनाओं का कारण बनती है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद देश में वाहनों की संख्या बड़ी तेजी से बढ़ी है। 1950 में देश में सड़कों की कुल लम्बाई 3.98 लाख किलोमीटर थी, जो अब 21 लाख किलोमीटर है। हमारे देश में प्रति एक लाख जनसंख्या पर 2600 वाहन हैं। वाहनों की वृद्धि के साथ–साथ दुर्घटनाओं में भी वृद्धि हुई है। प्रतिदिन औसतन 155 व्यक्ति सड़क दुर्घटनाओं में मरतें हैं और 700 घायल होतें हैं। प्रति हजार वाहनों पर 13 दुर्घटनाएं होती हैं। आंकड़ों के अनुसार भारत में लगभग प्रत्येक मिनट एक सड़क दुर्घटना होती है, और प्रत्येक 4 मिनिट में सड़क दुर्घटना में एक व्यक्ति की मौत होती है। दुर्घटनाओं में वृद्धि, मृत्यु दर में वृद्धि, वाहनों की संख्या में वृद्धि! कुल मिलाकर सड़क पर हर समय नाचती मृत्यु। रोज मौत सड़क पर हमें छूती है और हम अब मरे कि, तब मरे की स्थिति में सड़क पर मंडराते इस मौत के साये में घबरा उठते हैं।

हमारे देश में सड़क दुर्घटनाओं के कारण विकसित देशों से अलग हैं। इनमें शराब, खराब सड़कें, यातायात के नियमों का उल्लंघन, वाहनों की खराब स्थिति, प्रकार, संख्या, चालकों तथा लोगों में जागरूकता का आभाव आदि कारण प्रमुख हैं।

आंकड़े एक नजर में (data at a glance) :-

चालक की गलती सड़क दुर्घटनाओं का प्रमुख कारण होती है। जानकारी का आभाव तथा लापरवाहीपूर्ण ड्रायविंग के कारण सड़क पर गलतियां होती हैं, जिसके कारण सड़क दुर्घटनाएं होती हैं।

कुछ ऐसी ही असावधानियां निम्न हैं–

- बहुत तेज गति से वाहन चलाना
- नशे की हालत में वाहन चलाना
- ट्राफिक सिग्नल की अवहेलना
- सीट बेल्ट, हेलमेट जैसे सुरक्षा साधनों की उपेक्षा
- लेन ड्रायविंग का पालन न करना
- गलत तरीके से ओव्हर टेकिंग

यहां तालिका में दुर्घटनाओं का कारणवार ब्यौरा प्रस्तुत है:–

- चालक की गलती – 78.00%
- सड़क की खराब स्थिति – 1.2%
- मोटरवाहन की खराब स्थिति – 1.7%
- मौसम संबंधी परिस्थितियां – 1.0%
- अन्य – 14.2%

o"k	dy lMd n?kVuk,a	er	?kk;y
2011	486384	125660	511394
2012	497628	134513	515458
2013	499686	142485	527512

सरकारी नीतियां और उपाय (govt schemes & ideas) :-

•भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण ने, सड़क सुरक्षा में सुधार करने के लिए, विभिन्न कदम उठायें हैं जैसे सड़क फर्नीचर, सड़क पार्किंग चिन्ह, उन्नत परिवहन प्रणाली का प्रयोग करते हुए, राजमार्ग यातायात प्रबंधन प्रणाली आरंभ करना, चुनिंदा क्षेत्रों पर सड़क सुरक्षा ऑडिट इत्यादि।
•राज्यों में ड्रायविंग प्रशिक्षण स्कूलों की स्थापना।
•श्रव्य, दृश्य तथा प्रिंट माध्यमों के द्वारा सड़क सुरक्षा जागरूकता पर प्रचार अभियान।
•सड़क सुरक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए व्यक्ति विशेष तथा स्वैच्छिक संगठनों के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार प्रणाली आरंभ करना।
•वाहनों में सुरक्षा मानकों जैसे सीट बेल्ट, हेलमेट आदि के उपयोग को और अधिक सख्ती से लागू करना।
•राष्ट्रीय राजमार्ग दुर्घटना सहायता सेवा योजना के अंतर्गत विभिन्न राज्य सरकारों एवं गैर सरकारी संगठनों को क्रेनें तथा एम्बुलेन्स उपलब्ध कराना।
•राज्य सड़क सुरक्षा परिषदों तथा जिला समितियों की स्थापना करना।
•राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा नीति का क्रियान्वयन।

माननीय उच्चतम् न्यायालय के निर्णय याचिका क्र. 270, 1988डी/–28.08.1989 पं. परमानंद कटारा बनाम केन्द्र सरकार के अनुसारः–

'' भारतीय दंड संहिता, दंड प्रक्रिया संहिता, मोटर वाहन अधिनियम में ऐसा कोई प्रावधान नहीं है कि, किसी गंभीर रूप से घायल व्यक्ति को या दुर्घटना के मामले में, पुलिस के वहां पहुंचने तथा उस मामले की जांच–पड़ताल करने, प्रथम सूचना रिर्पोट तैयार करने तथा पुलिस द्वारा अन्य औपचारिकताओं से पूर्व डॉक्टर पीड़ित व्यक्ति को चिकित्सा उपचार नहीं दे सकता। ''

सड़क सुरक्षा के महत्तवपूर्ण तथ्य (Important facts of road safety) :-

•वर्ष 2030 तक यातायात के कारण लगने वाली चोंटें, वैश्विक रूप से मृत्यु का पांचवां सबसे बड़ा कारण बन जाएंगी।
•अधिकतर मौतें सिर पर चोटें लगने के कारण होती हैं। एक अच्छी गुणवत्ता वाला हेलमेट, सिर की गंभीर चोटों की संभवानाओं को 70 प्रतिशत तक कम कर सकता है।
•50 कि.मी. प्रति घंटे की गति से होने वाली टक्कर, पांचवी मंजिल से गिरने के बराबर नुकसान पहुंचाती है।
•सीट बेल्ट पहनने से चालक की दुर्घटना के दौरान मृत्यु की संभावना 60 प्रतिशत तक कम हो जाती है।
•वाहन की गति में प्रत्येक 1 प्रतिशत की कमी के परिणामस्वरूप दुर्घटनाओं की संख्या में 2 प्रतिशत की कमी होती है।
•भारत में कुल सड़क दुर्घटनाओं में मृत्यु की कुल संख्या मे से 10 से अधिक दुर्घटनाएं शराब/नशीले पदार्थों का सेवन करने के कारण होती है।

क्यों सड़कों पर नाचती है मौत...

सड़क हादसों में जान गंवाने वालो और घायलों के कसूरवार वह वाहन नही, जिससे उनकी टक्कर हुई है या फिर वह सड़क नहीं, जिस पर दुर्घटना हुई, अगर सड़क हादसों की गहनता से जांच की जाए तो कई ऐसे कारण सामने आते हैं, जिनके लिए काफी हद तक हम स्वयं जिम्मेदार हैं। इनमें सबसे बड़ा कारण है– 'नियमों का उल्लंघन'। सड़क हादसों में 50 फीसदी जानें इसी कारण से गंवाई जाती हैं, फिर इनमें चाहे गलत दिशा में वाहन चलाना हो या बिना हेलमेट के दो पहिया वाहन या फिर गाड़ी चलाते हुए मोबाइल पर बातें करना, जिनके कारण लोग हादसों का शिकार हो

जातें हैं। ओवर लोड और ओवर स्पीड तो वाहन दुर्घटनाओं में सबसे प्रमुख कारण है।

यातायात को नियंत्रित एवं व्यवस्थित करने के लिए कानून की कमी नहीं है, लेकिन ट्राफिक पुलिस का मुस्तैदी से काम करने की बजाए खुलेआम घूस लेना, पुलिस की कार्यसंस्कृति का हिस्सा बन चुका है। गलत तरीके से ओवरटेकिंग, बेवजह हार्न बजाना, निर्धारित लेन में न चलना और तेज गति से गाड़ी चलाना आज के युवकों का प्रमुख शौक बन गया है। धनाढ्य व्यक्तियों की बेलगाम मंहगी कारें कभी फुटपाथ पर सो रहे प्रवासी मजदूरों को कुचल देती हैं, तो कभी किसी झुग्गी में कोई कार घुसकर दो–चार जानें लेने के बाद ही आगे बढ़ती है। दुर्भाग्य की बात तो यह है कि, कानून का लम्बा हाथ भी इनके गिरेबांन तक नहीं पहुंचता है। विकास के साथ–साथ जिस सड़क संस्कृति की जरूरत होती है, वह हमारे देश में अभी तक नहीं बन पाई है।

हमारे देश में लाइसेंसिंग प्रणाली इतनी आसान है कि, कोई भी आदमी आराम से कुछ पैसा खर्च करके ड्रायविंग लाइसेंस प्राप्त कर सकता है, भले ही गाड़ी चलाने में उसकी कुशलता न के बराबर हो। जब तक कानून के साथ–साथ हम खुद की गलतियों को नहीं सुधारते, तब तक शायद सड़क हादसों का आंकड़ा इसी तरह से बढ़ता रहेगा।

निष्कर्ष (conclusion) :-

शहरी जीवन में हम सबको जल्दी होती है, और इस जल्दी में रूककर किसी की मदद करने के लिए लोगों के पास वक्त नहीं होता, ये जल्दी पहुंचने की चाह एक्सीलेटर पर और जोर डालती है, इतना जोर जो शायद खतरनाक साबित हो सकता है। हममें में से ऐसे कई लोग हैं जिन्हें लगता है कि, एक दो या तीन ड्रिंक से उनकी ड्रायविंग पर कोई असर नहीं होगा, और वो अपनी मंजिल तक आराम से पहुंच जाऐंगें। हममें से ऐसे कई लोग हैं, जो गाड़ी चलाते वक्त बहुत आराम से मोबाइल फोन पर बात करतें हैं, और हमें लगता है कि गाड़ी पर हमारा पूरा कंट्रोल है। हममें से कई लोग गाड़ी चलाते वक्त सेफ्टी बेल्ट नहीं लगाते, बाइक चलाते वक्त हेलमेट नहीं लगाते, क्योंकि हमें लगता है, हमें अपनी सेफ्टी की पूरी नॉलेज है, पर इस सब में हम ये भूल जातें हैं कि हम अपनी जिंदगी के साथ–साथ राह चल रहे दूसरें लोगों की भी जिंदगी खतरे में डाल रहें है। हम अपने आप को जितना भी अच्छा ड्राइवर समझें लेकिन हमें दूसरों की जिंदगी के साथ खिलवाड़ करने का कोई अधिकार नहीं है, क्योंकि दूसरे सिर्फ दूसरे नहीं बल्कि वो भी किसी के अपने हैं। सेल्फ डिसिप्लिन और कॉमन सेन्स की बातें तो काफी होती हैं, लेकिन सड़कों पर इसकी प्रैक्टिस बहुत कम ही दिखाई देती है। गलत पार्किंग हो, सिग्नल तोड़ना हो, ऐसा करने से हम अपने आप को सिर्फ इसलिए रोकतें हैं क्योंकि हमें वर्दी पहने पुलिस का डर होता है। हम यातायात के नियमों का पालन इसलिए नहीं करते हैं कि हमें दिल से अपनी और लोगों की सुरक्षा की फिक्र है। हम अक्सर दूसरे विकसित देशों के रोड डिसिप्लिन और ट्राफिक मैनेजमेंट की दात देते हैं और हमारे देश के ट्राफिक सिस्टम के साथ उसकी तुलना करतें हैं, लेकिन हम ये नकार नहीं सकते कि हमारे शहर की दयनीय और खतरनाक ट्राफिक अवस्था दरअसल हम लोगों के कारण ही है। हमें ये मानना ही होगा कि हम ऐसे नागरिक हैं जिनमें बिल्कुल भी सेल्फ डिसिप्लिन नहीं है। हम सिग्नल तोड़तें है, हम कहीं भी गाड़ी पार्क करतें हैं, हम सिग्नल दिए बिना लेन कट करतें हैं, हम हार्न पर से हाथ और एक्सीलेटर पर से पैर नहीं हटाते। हम सड़क पर क्या नहीं करते और फिर हम दोष देते हैं ट्राफिक मैनेजमेंट को।

हम अपने आप को आजाद मुल्क का आजाद नागरिक मानते हैं तो फिर हमें रोड डिसिप्लिन में रखने के लिए एक वर्दी वाले जवान की जरूरत क्यों पड़ती है? हममें से कई लोग अपनी गाड़ियों और बाइक्स पर अपने बच्चों को स्कूल छोड़ने जाते हैं वो बच्चे हमारी ड्राइविंग हमारा रोड डिसिप्लिन सब देख रहें हैं, सीख रहें हैं। अब आप ही बताइए हम भविष्य से क्या उम्मीद रख सकते हैं? हमारी सेल्फ डिसिप्लिन की कमी का साथ देता है एक ऐसा लीगल सिस्टम जो रैश ड्राइविंग के कानून को सुधारने की जल्दी में बिल्कुल नहीं है। हिट एण्ड रन केसेस और ड्रंकेन ड्राइविंग के केसेस में कड़ी सजा न होने के कारण लोग बहुत आसानी से बचकर निकल जाते हैं।

अगर ड्रंकेन ड्रायविंग का फाइन गाड़ी की कीमत के जितना हो तो, अगर नशे में गाड़ी चलाने वाले इंसान का लाइसेंस और गाड़ी हमेशा के लिए जब्त कर ली जाए तो, ड्रंकेन ड्रायविंग को एक गैर जमानती अपराध क्यों नहीं बनाया जा सकता? अगर कोई इंसान नशे में गाड़ी चलता है तो वो भीड़ में जाकर अंधाधुंध गोलियां चलाने के बराबर है। हमारा संविधान हर नागरिक को अपनी रक्षा करने का हक देता है लेकिन सड़क में चलने वाले, और गाड़ी चलाने वाले को अपनी रक्षा करने का मौका ही नहीं मिलता, क्योंकि उसे कैसे पता चलेगा के सामने से आ रहीं गाड़ी पेट्रोल पर नहीं,

बल्कि शराब के नशे में चल रही है। स्पीडिंग, ड्रंकेन ड्रायविंग रैश ड्रायविंग इन तीनों की बदौलत जो मौतें होती हैं वो नसीब और नियती की करनी नहीं है बल्कि हम सब की गलतियों का परिणाम हैं। सामाजिक जीवन में अपनी और दूसरों की सुरक्षा के लिए बनाए नियमों का पालन करना, एक विकल्प नहीं हो सकता, सड़कों पर सुरक्षा नियम हमारे और हमारे बच्चों की सुरक्षा के लिए हैं सारे समाज की सुरक्षा के लिए हैं। आज पूरा तंत्र सुधार की मांग कर रहा है, किसी एक संस्था के सुघार या बदलाव की बात नहीं है, जब तक सारे तंत्र की कमियों को नहीं सुधारा जाएगा, तब तक किसी न किसी रूप में सड़कों पर जिंदगी और मौत की आंख–मिचौली चलती ही रहेगी।

संदर्भ (references) :-

1.एक्सीडेन्टल डेथ एण्ड स्वीसाइड इन इंडिया 2012–2014, राष्टीय अपराध अभिलेख ब्यूरो, भारत सरकार, नई दिल्ली
2.रोड ट्राफिक एक्सीडेन्ट्स, एल.जी.नोरमन, 1962
3.भारत में सडक दुर्घटनाएं 2012–2014, परिवहन शोध ईकाई, सडक परिवहन एवं राष्ट्रीय राजमार्ग मंत्रालय, भारत सरकार
4.रोड ट्राफिक इंन्जुरीज फैक्ट मार्च 2013, विश्व स्वास्थय संगठन
5.एपीडेमोलॉजी आफ रोड ट्राफिक एक्सीडेन्टस इन इंडिया ; ए रिव्यू ऑफ लिट्रेचर, सर रतन टाटा ट्रस्ट

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.org